अध्याय 2

वे जो अपने देश में लौटे

एज्रा 2 में बड़े पैमाने पर नामों की एक सूची शामिल है - एक ऐसी सूची जिसे पढ़ना मुश्किल हो सकता है और शायद यह बिना रुकावट के लगता है। फिर भी, ये उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो यहोवा परमेश्वर से बहुत प्रेम करते थे, जो बेबीलोन में अपने घरों को छोड़ने और यहूदा की कठिन यात्रा करने और वहाँ अपने जीवन के पुनर्निर्माण के लिये जा रहे थे। वे हमारे सराहना के योग्य हैं।

अध्याय पहले यात्री दल के अगुवों की पहचान करता है, और फिर यह परिवारों के प्रमुखों और प्रत्येक घराने में लोगों की संख्या के नाम देता है। साधारण जनता (जो लोग याजक नहीं थे) अध्याय में पहले आते हैं, उसके बाद याजक, लेवी और मन्दिर के सेवक आते हैं, और फिर उन लोगों के जिनके नाम यहूदी अभिलेखागार में उपयुक्त दस्तावेजों पर नहीं पाए जा सकते हैं। अध्याय जो पहुँच चुके थे उन लोगों की कुल संख्या और मन्दिर के पुनर्निर्माण के लिये उन्होंने क्या दान दिया यह बताते हुए समाप्त होता है ।

अगुवे (2:1, 2)

[1]जिनको बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर बेबीलोन को बन्दी बनाकर ले गया था, उनमें से प्रान्त के जो लोग बंधुआई से छूटकर यरूशलेम और यहूदा को अपने अपने नगर में लौटे वे ये हैं। [2]ये जरुब्बाबेल, येशू, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम, और बाना के साथ आए। इस्राएली प्रजा के मनुष्यों की गिनती यह है: अर्थात्।

उचित रूप से, सूची उन लोगों के नामों से शुरू होती है जिन्होंने यात्री दल की अगुआई की।

आयत 1. वापसी के विवरण का एक विषय वाक्य होता है जैसे ही इसकी शुरुआत होती है। लेखक ने अपने इरादे की घोषणा की कि जो लोग बंधुआई से लौटे थे उन्होंने यह बताया कि वे क्यों और कहाँ बंधुआई में थे: वे **बेबीलोन** में थे क्योंकि **नबूकदनेस्सर** उन्हें वहाँ ले गया था। उसने उनके स्थान के बारे में भी बताया: **यरूशलेम और यहूदा**। जिस **प्रान्त** का उल्लेख किया गया था, वह सम्भवतः यहूदा का प्रान्त था, जिसे फारसी "येहुद" के नाम से जानते थे।[1] यह एक छोटा सा इलाका था जिसे बड़े शतर्बोजनै के रूप में उकेरा गया था जिसे "महानद के इस

पार [क्षेत्र]" (4:10; 5:3) या "हिद्देकेल के पार" (NIV) के रूप में पहचाना जाता था।

जो लोग अपने अपने नगर में लौटे, उनका अर्थ था कि यहूदियों को प्राप्त होने वाले पुनर्वास में, यथासंभव सीमा तक, जो भूमि बेबीलोन द्वारा यहूदा के विनाश से पहले उनके परिवारों की भूमि थी दे दी गई। यहूदियों के लिये लौट आए क्षेत्र में पिछले सत्तर वर्षों से आसपास के शासकों द्वारा अधिकार में ले लिया गया भूमि शामिल था, जो कि बाद में एज्रा और नहेम्याह में दिखाई देने वाली शत्रुता को स्पष्ट करती है।[2]

आयत 2. आयत 2 में शुरू होने वाली सूची को नहेम्याह 7:6-73 में मामूली अन्तर के साथ नकल किया गया है।[3] विसंगतियों को नकलकार द्वारा की गई त्रुटियों के लिये जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।[4] यह सूची उन लोगों के नाम के साथ शुरू होती है जिन्होंने यहूदियों का उनकी इस यात्रा में नेतृत्व किया था। यहूदियों के अगुवे के रूप में **जरुब्बाबेल** का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट है कि पहले उसकी पहचान की गई थी। भले ही शेशबस्सर को अध्याय 1 में यहूदियों का अगुआ कहा गया था, जिसने कुस्रू से मन्दिर के खजाने को प्राप्त किया और लोगों के साथ यरूशलेम गया, अध्याय 2 में उसका उल्लेख नहीं है (देखें टिप्पणियाँ 1:8 पर)। अगली पहचान **येशु** की हुई, क्योंकि उसने यहूदी महायाजक (3:2; हाग्गै 1:1; जकर्याह 3:1) के रूप में सेवा की थी। हाग्गै और जकर्याह में उसका नाम "यहोशू" है।

सूची में अन्य नाम पुराने नियम में कहीं और पाए जाते हैं, जो कि अलग-अलग पुरुषों पर लागू होते हैं (आधुनिक दिनों की तरह, कई व्यक्तियों को समान लोकप्रिय नामों से बुलाया जा सकता है)। यहाँ उल्लेखित **नहेम्याह** वह नहीं है जिसका नाम नहेम्याह की पुस्तक में दिया गया है, न ही **मोर्दकै** वही मोर्दकै है जो एस्तेर की पुस्तक में दिखाई देता है। ग्यारह नाम यहाँ पाए जाते हैं; परन्तु नहेम्याह 7 में इसी सूची में बारह नाम पाए जाते हैं। शायद यहूदियों ने बारह अगुओं को नियुक्त करके बारह गोत्रों की परम्परा को जारी रखने की माँग की; यदि हाँ, तो गलती से किसी एक को एज्रा की पुस्तक के प्रतिलेखक द्वारा छोड़ दिया गया होगा।

"प्रजा के लोग" (2:2-35)

[2]ये जरुब्बाबेल, येशू, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम, और बाना के साथ आए। इस्राएली प्रजा के मनुष्यों की गिनती यह है : अर्थात् [3]परोश की सन्तान दो हज़ार एक सौ बहत्तर, [4]शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहत्तर, [5]आरह की सन्तान सात सौ पचहत्तर, [6]पहत्मोआब की सन्तान येशू और योआब की सन्तान में से दो हज़ार आठ सौ बारह, [7]एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, [8]जत्तू की सन्तान नौ सौ पैंतालीस, [9]जक्कै की सन्तान सात सौ साठ, [10]बानी की सन्तान छः सौ बयालीस, [11]बेबै की सन्तान छः सौ तेईस, [12]अजगाद की सन्तान बारह सौ बाईस, [13]अदोनीकाम की सन्तान छः सौ

छियासठ, [14]बिगवै की सन्तान दो हज़ार छप्पन, [15]आदीन की सन्तान चार सौ चौवन, [16]हिजकिय्याह की सन्तान आतेर की सन्तान में से अट्ठानबे, [17]बेसै की सन्तान तीन सौ तेईस, [18]योरा के लोग एक सौ बारह, [19]हाशूम के लोग दो सौ तेईस, [20]गिब्बार के लोग पंचानबे, [21]बैतलहम के लोग एक सौ तेईस, [22]नतोपा के मनुष्य छप्पन, [23]अनातोत के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस, [24]अज्मावेत के लोग बयालीस, [25]किर्यतारीम कपीरा और वेरोत के लोग सात सौ तैंतालीस, [26]रामा और गेबा के लोग छ: सौ इक्कीस, [27]मिकमास के मनुष्य एक सौ बाईस, [28]बेतेल और ऐ के मनुष्य दो सौ तेईस, [29]नबो के लोग बावन, [30]मग्बीस की सन्तान एक सौ छप्पन, [31]दूसरे एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, [32]हारीम की सन्तान तीन सौ बीस, [33]लोद, हादीद और ओनो के लोग सात सौ पच्चीस, [34]रीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस, [35]सना के लोग तीन हज़ार छ: सौ तीस।

आयत 2. जो लोग लौटे, वे मुख्य रूप से दो गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे, जबकि उत्तरी राज्य से दस गोत्रों के लोगों की छोटी संख्या को शामिल किया जा सकता था। फिर भी, उन्हें इस्राएल के रूप में जाने जाते थे - परमेश्वर के लोग जिनके साथ उसने मिस्र से उन्हें छुड़ाने के बाद सीनै में एक वाचा बाँधी थी। आयत 2 स्पष्ट रूप से एक सूची को दिखाता है जो वयस्क पुरुषों की संख्या देता है जो जरुब्बाबेल (2:2) के साथ लौट आए थे। परन्तु, कुछ लोगों को इस सूची देखते हैं, न केवल उन लोगों के साथ जो जरुब्बाबेल के साथ वापस लौट आए, परन्तु अन्य जो बाद में वापस आए, शायद एज्रा के समय तक भी।[5]

आयतें 3-35. सूची में स्वीकार किए गए पहले समूह में वे लोग शामिल हैं, जिन्हें "साधारण जनता" के रूप में देखा जा सकता है। व्यवस्था के अधीन, याजकों और "सामान्य लोगों" के बीच एक स्पष्ट अन्तर था - अर्थात्, हर कोई।[6] यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि लेखक ने उन लोगों को सूचीबद्ध किया हो जो याजक सूचीबद्ध करने से पहले याजक नहीं थे। वह सुझाव दे रहा होगा कि इस्राएल के महान दल के इन प्रतिनिधियों की वापसी इस तथ्य से अधिक महत्वपूर्ण थी कि कुछ याजक यरूशलेम गए थे।

"सामान्य लोगों" को या तो प्रमुख पूर्वजों के नामों के अनुसार सूचीबद्ध किया जाता है[7] (निश्चित रूप से आयत 20 के द्वारा) या उन स्थानों के नामों के अनुसार, जहाँ उनके परिवार रहते थे (जैसा कि आयतें 21 से 35 में मामला जान पड़ता है)। इन दो श्रेणियों से संकेत मिलता है कि यहूदियों ने (बिना त्रुटि के) दोनों वंशावली और विभिन्न नगरों के निवासियों की जानकारी दर्ज करके रखा। (शायद उनके पास भी जनगणना सूचियाँ थीं जो लूका 2 में बताई गई जनगणना के परिणामस्वरूप प्राप्त हैं।) इसके अतिरिक्त, जब उन्हें बेबीलोन के लिये देश से निकाला गया था, तो वे उन अभिलेखों को अपने साथ ले गए होंगे। एक यहूदी के रूप में जाने के लिये, निश्चित रूप से केवल यह प्रमाणित करना था कि वह एक यहूदी घराने के वंश से था या यहूदी नगर में देश से निकाले जाने से पहले रहता था। यहूदा के किसी एक नगर में एक निवासी के रूप में रहने से जो योग्यता प्राप्त

हो सकती थी, वह यात्री निवासी होने या वापस आने वाले यहूदियों में गिने जाने की अनुमति देता था।

जो मन्दिर के लिये समर्पित थे (2:36-58)

याजक, लेवियों, और मन्दिर के सेवकों जो यात्रियों में से थे, अगली सूची में आते हैं।

याजक (2:36-39)

[36]फिर याजकों अर्थात् येशू के घराने में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर, [37]इम्मेर की सन्तान एक हज़ार बावन, [38]पशहूर की सन्तान बारह सौ सैंतालीस, [39]हारीम की सन्तान एक हज़ार सत्रह।

आयतें 36-39. याजक लौटने वाले उन परिवारों से थे जो मन्दिर की सेवा टहल से जुड़े थे। ये लोग इस्राएल के धर्म का एक अनिवार्य हिस्सा थे। व्यवस्था का पालन करते हुए, उन्होंने बलिदान चढ़ाया, मन्दिर की आराधना की देखरेख की, और लोगों की ओर से परमेश्वर के साथ मध्यस्थता किया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया था, **येशु** महायाजक था (देखें टिप्पणी 2:2 पर)।

लेवी (2:40-42)

[40]फिर लेवीय, अर्थात् येशू की सन्तान और कदमिएल की सन्तान होदग्याह की सन्तान में से चौहत्तर। [41]फिर गवैयों में से आसाप की सन्तान एक सौ अट्ठाईस। [42]फिर दरबानों की सन्तान, शल्लूम की सन्तान, आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, हतीता की सन्तान, और शोबै की सन्तान, ये सब मिलाकर एक सौ उनतालीस हुए।

आयतें 40-42. व्यवस्था के अनुसार, **लेवियों** को मन्दिर में याजकों की सहायता करनी थी। बड़ी बात यह है कि इस समय याजकों की तुलना में लेवी बहुत कम थे, जबकि व्यवस्था का अर्थ यह था कि प्रत्येक याजक के लिये दस लेवियों का साथ होना चाहिए।[8] लगभग अस्सी वर्ष बाद, जब एज्रा पहुँचा, तो उसने भी लेवियों की कमी पाई और उन्हें स्थिति को सही करने की माँग की (8:15-20)। **गवैए** और **दरबान** भी लेवी थे।

मन्दिर के सेवक (2:43-58)

[43]फिर नतीन की सन्तान, सीहा की सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की सन्तान, [44]केरोस की सन्तान, सीअहा की सन्तान, पादोन की सन्तान, [45]लबाना की सन्तान, हगबा की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, [46]हागाब की सन्तान, शल्मै

की सन्तान, हानान की सन्तान, [47]गिद्दल की सन्तान, गहर की सन्तान, रायाह की सन्तान, [48]रसीन की सन्तान, नकोदा की सन्तान, गज्जाम की सन्तान, [49]उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान, बेसै की सन्तान, [50]अस्ना की सन्तान, मूनीम की सन्तान, नपीसीम की सन्तान, [51]बकबूक की सन्तान, हकूपा की सन्तान, हर्हूर की सन्तान, [52]बसलूत की सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान, [53]बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमह की सन्तान, [54]नसीह की सन्तान, और हतीपा की सन्तान। [55]फिर सुलैमान के दासों की सन्तान, सोतै की सन्तान, हस्सोपेरेत की सन्तान, परूदा की सन्तान, [56]याला की सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिद्देल की सन्तान, [57]शपत्याह की सन्तान, हत्तील की सन्तान, पोकरेतसबायीम की सन्तान, और आमी की सन्तान। [58]सब नतीन और सुलैमान के दासों की सन्तान तीन सौ बानवे थे।

आयतें 43-54. अभिव्यक्ति **मन्दिर के सेवक** का इब्रानी शब्द נְתִינִים (नेथिनिम) का अनुवाद करते हैं, जिसका अर्थ है "जो दिए गए या समर्पित हों" (देखें 7:24)। ये दास हुआ करते थे जो मन्दिर की सेवाओं को पूरा करने के लिये आवश्यक कार्यों में सहायता के लिये लेवियों को "दिए गए" थे। इस्राएल के याजकों द्वारा दासों का उपयोग पुराने नियम में *नेथिनिम* शब्द की उपस्थिति का विरोध करता है, जहाँ यह केवल एज्रा, नहेम्याह और 1 इतिहास में पाया जाता है। यह प्रथा मूसा और यहोशू के समय से चली आ रही थी (गिनती 31:30, 47; यहोशू 9:26, 27)। वर्तमान संदर्भ में, "मन्दिर के सेवक" स्पष्ट रूप से उन दासों के वंशज थे, जिन्हें दाऊद और उनके अधिकारियों ने लेवियों (8:20) को दिया था। ये व्यक्ति मुख्य रूप से परदेशी थे जो इस्राएल के साथ निकटता से जुड़े थे, जैसा कि इस सूची में उनका शामिल होना इसे इंगित करता है।[9]

आयतें 55-57. सुलैमान के दासों की सन्तान का मन्दिर के साथ जुड़े लोगों की सूची में अन्तिम रूप से उल्लेख किया गया है। ये लोग "कनानी बंदी हो सकते थे, जो कि निम्न स्तर की सेवा के लिये मन्दिर प्राधिकारियों को सौंप दिए गए थे [1 राजा. 9:20, 21] या राज्य के दास जो राज्य के पतन के बाद *नेतिनिम* के साथ जुड़ गए थे।"[10]

आयत 58. मन्दिर के सेवकों **और सुलैमान के दासों की सन्तानों** की कुल संख्या 392 देते हुए इस भाग की समाप्ति होती है।

बिना किसी परिचय पत्र के लोग (2:59-63)

[59]फिर जो तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब, अद्दान और इम्मेर से आए, परन्तु वे अपने अपने पितरों के घराने और वंशावली न बता सके कि वे इस्राएल के हैं, वे ये हैं: [60]दलायाह की सन्तान, तोबिय्याह की सन्तान और नकोदा की सन्तान, जो मिलकर छः सौ बावन थे। [61]याजकों की सन्तान में से हबायाह की सन्तान, हक्कोस की सन्तान और बर्जिल्लै की सन्तान, जिसने गिलादी बर्जिल्लै की एक बेटी को

ब्याह लिया और उसी का नाम रख लिया था। 62इन सभों ने अपनी अपनी वंशावली का पत्र औरों की वंशावली की पोथियों में ढूँढ़ा, परन्तु वे न मिले, इसलिये वे अशुद्ध ठहराकर याजकपद से निकाले गए; 63और अधिपति ने उनसे कहा कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला कोई याजक न हो, तब तक कोई परमपवित्र वस्तु खाने न पाए।

जो लोग लौटे उनमें अन्तिम श्रेणी के लोग वे थे जो यह सिद्ध नहीं कर पाए कि वे वास्तव में इस्राएल से हैं।

आयतें 59, 60. सूची के इस भाग में उन घरानों के नाम शामिल हैं जिनके पास यह प्रमाणित करने के लिए कोई रिकॉर्ड नहीं थे कि वे इस्राएली पूर्वजों की **वंशावली** से थे। उनकी पहचान बेबीलोन के अनेक शहरों से यरूशलेम में आए हुए लोगों के रूप में की गई (**तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब, अद्दान और इम्मेर**) जो यह अर्थ प्रदान करता है कि वे निर्वासन में यहूदियों के मुख्य समूह से अलग रहते हुए जीवन जी रहे थे। यह सम्भावना, बदले में, शायद यह विवरण दे सकती है कि उनका रिकॉर्ड क्यों नहीं मिला। अन्य सुझाव यह है कि वे यहूदी धर्म अपनाने वाले लोगों के वंश से थे और इस कारण कोई दस्तावेज़ उपलब्ध नहीं करवा पाए कि वे **इस्राएल** के हैं। जैसा उनके बारे में कुछ अधिक नहीं कहा गया है इसलिए ये **छः सौ बावन** लोग शायद परमेश्वर के लोगों के रूप में स्वीकार कर लिए गए।

आयतें 61-63. एक और समस्या उस समय उत्पन्न हुई जब **याजकों की सन्तान** में से कुछ लोग सिद्ध नहीं कर पाए कि वे हारून के वंशज हैं। यह स्थिति बड़ी ही गम्भीर थी क्योंकि अगर ऐसे में वे बलिदान चढ़ाने का प्रयास करें तो परमेश्वर क्रोधित भी हो सकता था - ठीक उसी समान जैसा कोरह और उसके अनुयायियों के साथ हुआ जब उन्होंने जंगल में बलपूर्वक याजकपद छीनने का प्रयास किया (गिनती 16:1-40)।

ये पुरुष याजकीय सेवा करने और शुद्ध किया हुआ भोजन खाने से अल्पकालीन रूप से अथवा अस्थायी रूप से **निकाले गए**। इस कारण **जब तक ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला कोई याजक न हो** तब तक के लिए यह निर्णय सम्भवतः **अधिपति** जरुब्बाबेल के द्वारा लिया गया। ऊरीम और तुम्मीम सम्भावित रूप से छोटे पत्थर थे जिनका प्रयोग महायाजक, परमेश्वर की इच्छा का सुनिश्चय करने के लिए करता था (देखें निर्गमन 28:30; लैव्य. 8:8; गिनती 27:21; 1 शमूएल 28:6)। जिस समय यहूदियों के पास एक महायाजक (येशू) था तब ऊपरी तौर पर ऊरीम और तुम्मीम सम्भावित रूप से उस समय खो गए जब यरूशलेम नष्ट किया गया और यहूदियों को बेबीलोन की ओर निर्वासित कर दिया गया। ऊरीम और तुम्मीम के बिना परमेश्वर के लोग निश्चित रूप से जान नहीं पाए कि बिना किसी परिचय पत्र के याजक लोग वास्तव में याजक है या नहीं। अतः ऊरीम और तुम्मीम प्राप्त किए जाने तक ये पुरुष याजकपद से निकाले गए। पाठ्य आगे बिल्कुल भी प्रकट नहीं करता कि सूचीबद्ध किए हुए इन पुरुषों को याजक के रूप में स्वीकृति दे दी गई।

कुल गिनती (2:64-67)

[64]समस्त मण्डली मिलाकर बयालीस हज़ार तीन सौ साठ की थी। [65]इनको छोड़ इनके सात हज़ार तीन सौ सैंतीस दास-दासियाँ और दो सौ गानेवाले और गानेवालियाँ थीं। [66]उनके घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर दो सौ पैंतालीस, ऊँट चार सौ पैंतीस [67]और गदहे छः हज़ार सात सौ बीस थे।

यह सूची कुल गिनती देते हुए समाप्त होती है - जिसमें मात्र यहूदा में जाने वाले लोगों की ही गिनती नहीं है परन्तु उन्होंने अपने संग जो कुछ लिया उसकी भी गिनती है।

आयत 64. जिन लोगों ने यात्रा की उनकी कुल संख्या **बयालीस हज़ार तीन सौ साठ** बताई गई है। यह उस संख्या से मिलान नहीं रखती जो 2:2-63 में दी गई है, जो उन्तीस हज़ार आठ सौ अठारह है।[11] यह अन्तर किस प्रकार समझाया जा सकता है? यह सुझाया गया है कि बयालीस हज़ार तीन सौ साठ में महिलाएँ और/अथवा किशोरों को भी शामिल किया गया। यह सम्भव है परन्तु अनुपयुक्त जान पड़ता है। अन्य विचार यह है कि यह अन्तर, संख्या की नकल करते समय लिपि की त्रुटि के परिणामस्वरूप है।[12] फिर अन्य सम्भावना यह है कि, जो सम्भावित रूप से एकदम सही हो सकती है कि, यह सूची "मात्र औपचारिक" रूप में होने के लिए रखी गई है।[13]

आयतें 65-67. एक परिशिष्ट भाग के रूप में लेखक ने यह जोड़ा कि यहूदियों ने अपने संग सात हज़ार से अधिक **दास-दासियाँ** (गुलाम) लिए। इसके अनुसार उसने **गानेवाले और गानेवालियों** की संख्या **दो सौ** दी। क्या ये लोग सांसारिक रूप से मनोरंजन करने वाले लोग थे अथवा मन्दिर में गाने वाले गायकों का एक भाग थे? जैसा "गानेवालों" को बाद में "द्वारपाल" और "नतीन लोग" बताया गया (2:70) इस कारण बाद की यह सम्भावना अधिक उचित जान पड़ती है। यह परिशिष्ट भाग **घोड़े**, **खच्चर**, **ऊँट और ... गदहे** की एक विस्तृत सूची के साथ समाप्त होता है जो उनके पास थे।

आगमन और मन्दिर के लिए दान (2:68-70)

[68]पितरों के घरानों के कुछ मुख्य मुख्य पुरुषों ने जब यहोवा के भवन को जो यरूशलेम में है, आए, तब परमेश्वर के भवन को उसी के स्थान पर खड़ा करने के लिये अपनी अपनी इच्छा से कुछ दिया। [69]उन्होंने अपनी अपनी पूंजी के अनुसार इकसठ हज़ार दर्कमोन सोना और पाँच हज़ार माने चाँदी और याजकों के योग्य एक सौ अंगरखे अपनी अपनी इच्छा से उस काम के खजाने में दे दिए। [70]तब याजक, और लेवीय, और लोगों में से कुछ और गवैये, और द्वारपाल, और नतीन लोग अपने नगर में, और सब इस्राएली अपने अपने नगर में फिर बस गए।

अध्याय 2 के अन्तिम शब्द यहूदियों के यरूशलेम में आगमन, मन्दिर के पुनः निर्माण के लिए जो दान उन्होंने अर्पित किए उनके बारे में और यहूदा में उनके बसाव के बारे में बताता है।

आयतें 68, 69. लौटकर आने वाले लोगों के लिए काम का पहला क्रम यह था कि वे **परमेश्वर के भवन** को **उसी के स्थान पर खड़ा करें**। स्पष्ट रूप से निर्वासित लोगों में सब लोग दरिद्र नहीं थे; क्योंकि जो कुछ उन्होंने दिया - अर्थात **इकसठ हज़ार दर्कमोन सोना** [दारिक; NRSV] **और पाँच हज़ार माने चाँदी** - वह बड़े मूल्य के साथ था। उन्होंने **अपनी अपनी पूंजी के अनुसार** उदारता से दिया।

आयत 70. यह अध्याय ऐसा कहते हुए समाप्त होता है कि जो लोग लौटकर आए - अर्थात **याजक, और लेवीय, और लोगों में से कुछ और गवैये, और द्वारपाल, और नतीन लोग** और **सब इस्राएली** - वे **अपने अपने नगर में** फिर बस गए। अन्य शब्दों में, वे उन्हीं नगरों में पहुँचे जो नगर लोग उस समय पीछे छोड़ आए थे जब नबूकदनेस्सर उन्हें बन्दी बनाकर बेबीलोन ले गया।

नबूवत की एक बड़ी पूर्ति में इन यहूदियों ने जबकि मूर्तिपूजा का मूल्य चुकाने का एक कठोर पाठ सीखा, इन्हें अपने निर्वासन की भूमि छोड़ने और यरूशलेम की ओर जाने की स्वीकृति मिल गई। वहाँ वे स्वयं का जीवन और परमेश्वर के मन्दिर का पुनः निर्माण करने वाले थे और परमेश्वर के लोग होने के लिए एक बार फिर स्वयं को समर्पित करने वाले थे।

अनुप्रयोग

"घर की ओर जा रहा हूँ" (अध्याय 2)

गायन मण्डली के द्वारा एक पुराना गीत प्रायः गाया जाता है जो निम्नलिखित शब्द शामिल करता है:

घर की ओर जा रहा हूँ, घर की ओर जा रहा हूँ, मैं घर की ओर जा रहा हूँ;
कुछ इस प्रकार, जैसे किसी शान्त दिन के समान, मैं बस घर जा रहा हूँ।
यह अधिक दूर नहीं है, यह पास में ही है,
एक खुले द्वार से;
सारा काम कर लिया गया है, जो देखरेख दी गई थी,
अब आगे डरने की आवश्यकता नहीं है ...

कुछ भी खोया नहीं है, सब पा लिया है,
अब आगे न तो चिड़चिड़ाहट है न ही पीड़ा है,
अब आगे मार्ग में ठोकर नहीं है,
अब आगे दिन के लिए प्यास नहीं है,
अब आगे भटकने की आवश्यकता नहीं है!
सुबह का तारा मार्ग को प्रकाशमान करता है,

बेरोक स्वप्न पूरे हो गए हैं;
छायाएँ चली गई हैं, दिन छँट गया है,
मेरा वास्तविक जीवन अभी अभी आरम्भ हो गया है ... [14]

ये शब्द हमें हिला देते हैं क्योंकि "घर" शब्द किसी भी भाषा में बहुत ही अर्थपूर्ण शब्दों में से एक है। हममें से लगभग सब लोग घर को - ऐसे स्थान के रूप में देखते हैं जहाँ पर हम विशेष अवसरों पर रहने की लालसा रखते हैं, ऐसे स्थान के रूप में देखते हैं जहाँ पर हमारा हृदय आराम महसूस करता है फिर हमारा संसार चाहे कितना ही अव्यवस्थित क्यों न हो, हम इसे ऐसे स्थान के रूप में देखते हुए महसूस करते हैं कि हम इसके हैं। "घर की ओर जा रहा हूँ," इस कारण, एक ऐसा पद है जो हमसे बड़ा निवेदन करता है। हम सब घर जाना पसन्द करते हैं।

यहूदियों की गुलामी से वापसी के बारे में एज्रा 2 "उनके द्वारा घर की ओर जाने" के रूप में बताता है। जब हम इसे पढ़ते हैं तब इसकी तुलना अन्य अवसरों में वापसी के साथ अर्थात अन्य समय में "घर की ओर लौटने" के साथ कर सकते हैं। मार्ग में हम कुछ पाठ सीख सकते हैं जो हमें सहायता देंगे जब हम अपने स्वर्गीय घर की ओर यात्रा करते हैं।

उनकी वापसी।

यह कब हुआ? बेबीलोन की गुलामी से यहूदा की वापसी 539 ई.पू. के बाद के समय में सम्भावित रूप से 538 में हुई।[15] यह, इस कारण, पहले यहूदियों को बेबीलोन में भेजने के लगभग सत्तर वर्ष बाद की बात है (देखें यिर्म. 29:10; दानिय्येल 1:1, 2)। वे अनेक वर्षों तक अपने घर से दूर रहे थे!

इस वापसी में किसने अगुआई दी? ऐसा देखने को मिलता है कि पहली वापसी का प्रमुख अगुआ जरुब्बाबेल था। आयत 2 कहती है, "ये जरुब्बाबेल, येशू, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम, और बाना के साथ आए।" जैसा जरुब्बाबेल को सूची में पहले स्थान पर रखा गया है इस कारण ऊपरी तौर पर वह अगुआ था। जरुब्बाबेल को (येशू याजक के साथ) एज्रा 3:2; 4:2, 3; 5:2 में, साथ ही हाग्गै 1:1, 12, 14; 2:2, 4, 21, 23 में और जकर्याह 4:6-10 में यहूदियों का अगुआ के रूप में भी बताया गया है। हाग्गै में जरुब्बाबेल को यहूदा के अधिपति के रूप में नियुक्त किया गया है (हाग्गै 1:1)।

कितने लोग वापस लौटे? 2:64, 65 के अनुसार चालीस हज़ार से भी अधिक यहूदी बेबीलोन से पलिस्तीन की ओर लौटे। दासों सहित संख्या लगभग पचास हज़ार रही होगी।

इसमें कितना समय लगा? एक टीकाकार ने कहा कि बेबीलोन से यहूदा की यात्रा में सम्भावित रूप से चार महीनों का समय लगा।[16] निश्चितता के साथ यह यात्रा कठिन रही होगी: चार महीने सड़क पर रहना, निरन्तर यात्रा करते रहना, छावनी तैयार करना, रात बिताना और फिर निकल पड़ना। उनके द्वारा निरन्तर आगे बढ़ते रहने का एकमात्र कारण शायद वह विचार रहा होगा कि "हम घर जा रहे हैं!"

कौन कौन लौटे? लौट कर आने वाले लोगों के नामों के बारे में एज्रा 2 विशाल रूप से बताता है। सूची में कुछ रुचिकर विवरण देखे जा सकते हैं। वहाँ पर नाम श्रेणियों और संख्या में दिए गए हैं: परिवारों के अनुसार (जैसा 2:3, 4 में देखने को मिलता है: "परोश की सन्तान दो हज़ार एक सौ बहत्तर; शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहत्तर"), स्थानों के अनुसार (जैसा 2:34 में देखने को मिलता है: "यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस") और व्यवसाय के अनुसार – "याजक" (2:36), "लेवी" (2:40) और "नतीन" (2:43)। फिर, कुछ लोग जो सूचीबद्ध किए गए उनके नाम उपयुक्त वंशावलियों में नहीं पाए गए (2:59-63)।

अध्याय 2 के सम्बन्ध में हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि कुछ वर्गों के लिए वंशावलियां बहुत ही महत्वपूर्ण थीं। उस दृष्टिकोण से ऐसा देखने को मिलता है कि बेबीलोन में रहने वाले लोगों की तुलना में जो लोग लौटकर आए उन्होंने उन वायदों में बड़ा विश्वास दिखाया, जो उनके पूर्वजों से किए गए थे। फिर, जो लोग अपनी यहूदी वंशावली की खोज नहीं कर पाए वे अधिक प्रशंसा के योग्य थे। उनकी विरासत का कोई प्रमाण नहीं होते हुए, और इस कारण परमेश्वर के चुने हुए लोगों के समुदाय में स्वीकार किए जाने की निश्चितता नहीं होने के बाद भी उन्होंने उन वायदों पर विश्वास किया जो यहूदियों से किए गए थे और वे उसके पूरे होने का एक भाग बनना चाहते थे।

वे लौटकर क्यों आए? यह लौटना स्वैच्छिक था। अनेक यहूदी बेबीलोन में रहते थे और ऐसा करने के लिए उनके पास अच्छे कारण थे। किसी स्थान में अनेक वर्षों तक रहने के बाद एक व्यक्ति को वह स्थान "घर" जैसा लगता है। यह विशेष रूप से वहाँ पर सही प्रकार से देखा जा सकता है जब कोई अपने नए घर में समृद्धि प्राप्त करता है। इसका एक साक्ष्य इस सच्चाई को प्रकट करता है कि जो लोग वहाँ पर रह रहे थे उन्होंने उन लोगों को दानों के साथ भेजा जो लौट रहे थे (1:4, 6)। फिर, दासता के बाद बेबीलोन में एक विशाल यहूदी समुदाय था। यहूदियों के बेबीलोनी समुदाय का महत्व बेबीलोन के तल्मूड के द्वारा अनुप्रमाणित किया गया जो वहाँ पर उस समय उत्पन्न हो गया जब यहूदी लेखनों के दो संग्रहों में से एक ने अनेक शताब्दियों तक यहूदी विचार को प्रतिबिम्बित और प्रभावित किया।

जो लोग लौटकर आए उन्होंने अनिवार्य रूप से ऐसा नहीं किया क्योंकि वे अपने भाग्य की खोज कर रहे थे। वे सब के सब दरिद्र नहीं थे जो एक उज्ज्वल भविष्य की खोज कर रहे हों। हम जानते हैं कि कम से कम उनमें से कुछ लोग सेवक अथवा गुलाम थे (2:65)। साथ ही वे मन्दिर के पुनः निर्माण के लिए उदारता से दे सके। उनमें से कुछ लोगों के पास, अगर वे धनवान नहीं हों तब भी, पर्याप्त मात्रा में स्रोत थे।

इससे पहले कि हम इस प्रश्न का उत्तर दें कि "वे लौटकर क्यों आए?" शायद हमें यह पूछना चाहिए, "प्रभु ने ऐसा क्यों किया कि वे लौट सकें?" पलिस्तीन की भूमि वह रंगमंच होनी चाहिए थी जिस पर छुटकारे के नाटक के अगले दृश्य की प्रस्तुति होनी थी।

अब्राहम को परमेश्वर की बुलाहट के आरम्भ से ही वह भूमि परमेश्वर की

योजना में शामिल थी। इसका वायदा अब्राहम से (उत्पत्ति 15:18; 17:8; 24:7), इसहाक से (उत्पत्ति 26:3, 4), याकूब से (उत्पत्ति 28:13; 35:12) और अन्त में इस्राएली जाति से किया गया था (उत्पत्ति 50:24; निर्गमन 3:17; 6:8; 13:11)। परमेश्वर ने इस्राएल को एक देश देने का वायदा पूरा किया जब उसने उन्हें कनान पर विजय प्राप्त करने में सहायता दी (यहोशू 11:23; 21:43-45; देखें व्यव. 4:37, 38)। परमेश्वर ने इस्राएल को उपदेश भी दिए कि वे उसकी व्यवस्था की पालना उस देश में करते रहें जो उसने उन्हें दिया है (देखें व्यव. 5:31-33; 6:1-3)। उसने उन्हें चेतावनी दी कि अगर वे उसकी व्यवस्था का पालन करने में असफल रहे तो वह उन्हें उस देश से निकाल देगा (व्यव. 4:25- 27)। परमेश्वर ने इस्राएल से यह भी कहा कि अगर वे व्यवस्था का पालन करने से मना करते हैं तो वह उन्हें तितर-बितर कर देगा (व्यव. 28:58, 64)। उसने यह भी प्रकट किया कि, उनके पश्चात्ताप के आधार पर, वह उन्हें अन्त में फिर से उसी देश में ले आएगा (व्यव. 30:1-3)। यिर्मयाह ने नबूवत की कि यहूदा सत्तर वर्षों के लिए निर्वासन में जाएगा और तब इस्राएल उस देश में फिर से लौटकर आएगा (यिर्म. 16:14, 15; 23:7, 8; 25:11, 12; 29:10)।

इस कारण, यहूदियों का लौटना आवश्यक था जिससे वे नबूवतें पूरी हों कि परमेश्वर के लोग उस देश की ओर लौटकर आएँगे। साथ ही, यह बैतलहम में मसीहा अर्थात मसीह के जन्म के लिए (मत्ती 2:5, 6; देखें मीका 5:2) और यरूशलेम में राज्य की स्थापना के लिए (प्रेरितों 2:1-47; यशा. 2:2, 3) मंच तैयार करता है। यह इस वायदे की पूर्ति की ओर भी एक अन्य कदम था कि अब्राहम के वंश से जन्म लेने वाले एक व्यक्ति से संसार आशीषित किया जाएगा।

फिर भी प्रश्न अब भी बना हुआ है: इन लोगों ने लौटने का चुनाव क्यों किया? आर्थिक कारणों से ऐसा नहीं किया गया! इसके स्थान पर जो लोग लौटकर आए उनके पास प्राथमिक रूप से "घर जाने" का एक धार्मिक कारण था: वे उस भूमि की ओर लौटना चाहते थे जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी। उनकी वापसी ने परमेश्वर में और उसके वायदों में और उसकी योजना में विश्वास दिखाया।

अधिकतर गुलाम अक्षरशः यहूदा की ओर नहीं "लौटे" क्योंकि वे कभी भी पलिस्तीन में नहीं रहे थे! उनका जन्म बेबीलोन में ही हुआ था। मात्र पुरानी पीढ़ी ही यहूदा में रही होगी जो गुलाम बना कर बेबीलोन ले जायी गई और यहूदा में अपने पूर्व जीवन की यादों के साथ इस समय लौटी थी! लौटने वाले लोगों में अधिकतर लोग "विश्वास के साथ" घर जा रहे थे अर्थात वे एक ऐसे देश की ओर यात्रा कर रहे थे जो उन्होंने कभी भी देखा नहीं था। वे लोग उसके बारे में वे ही बातें जानते थे जो उनसे कही गई थीं। उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर के वायदों के कारण यहूदा वह स्थान है जिसके वे निवासी हैं।

हमारी वापसी।

उनकी यात्रा हमें किसके बारे में याद दिलाती है? हमें उन इस्राएलियों को याद करना चाहिए, जिन्होंने परमेश्वर के निर्देशन के अन्तर्गत उस देश की ओर जाने के लिए मिस्र छोड़ा जिसे उनके लिए उपलब्ध करवाने के लिए परमेश्वर ने

वायदा किया था। उनकी यात्रा कुछ महीनों या एक वर्ष की नहीं थी, जैसी कि यह होनी चाहिए थी परन्तु यह चालीस वर्षों की थी। इसमें एक कठिन जंगल में मृत्यु और कठिनाइयाँ शामिल थीं। फिर भी जब वे कनान में पहुँचे तब अन्त में उन्होंने "घर" पहुँचने के एक रोमांच के समान महसूस किया होगा।

एज्रा के दिनों में यहूदियों के समान हम भी एक दिन "घर जाने" वाले हैं। उनमें से अनेक लोगों के समान, जिस घर की ओर हम जा रहे हैं वह ऐसा घर है जिसे हमने अब तक देखा भी नहीं है। हम इसमें विश्वास करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें इसके बारे में बताया है। उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमें कितना आगे की ओर देखना चाहिए? जैसा यहूदियों के साथ था उसी के समान घर पहुँचने पर हममें बड़ा ही आनन्द पाया जाए! क्या "घर जाने" का दृश्य हमें रोमांचित करता है जैसा कि हमारे साथ होना चाहिए?

मैं अन्य लोगों के लिए कुछ नहीं कह सकता परन्तु किसी सांसारिक स्थान के बारे में चिन्ता करने के लिए मैं किसी एक स्थान में लम्बे समय तक नहीं रहा जिसकी ओर किसी दिन मैं "घर जाना" चाहता हूँ। जैसा अनेक भजन इसके बारे में बताते हैं उसी समय मेरा घर "उस पार का" है।

फिर भी सब मसीही लोगों के लिए यह सच में है। "हमारी नागरिकता" - हमारा गृह देश – "स्वर्ग में है" (फिलि. 3:20)। यहाँ पर हम "परदेशी और यात्री" (1 पतरस 2:11) हैं; यह संसार वास्तव में वह स्थान नहीं है जिसके हम निवासी हैं। शायद हमें इसके बारे में स्वयं को याद दिलाने की आवश्यकता है। ऐसा हो सकता है कि जिस स्थान में हम रहते हैं वह हमें प्रिय लगे परन्तु एक दिन हम एक उत्तम स्थान की ओर अर्थात "अपने घर" जाने वाले हैं।

हम गाते हैं मानो हम "घर जाने" के लिए उत्सुक हैं।[17] हम इस प्रकार गाते हैं, "यहाँ पर हम मात्र भटकने वाले यात्री हैं" और "सुनो, उस ओर एक घर के बारे में विचार करो, जो एक प्रकार की नदी के निकट है।" हम इस प्रकार गाते हैं, "सुनो, वे लोग मुझे एक घर के बारे में बताते हैं जो दूर आकाश के परे है, सुनो, वे लोग मुझे एक घर के बारे में बताते हैं जो बहुत दूर है।"

क्या हम इस प्रकार जीते हैं मानो हम "घर जाने" के लिए उत्सुक हैं? अगर हमसे पूछा जाए, "आपका वास्तविक घर कहाँ पर है?" तब हममें से अधिकतर लोग सही उत्तर देंगे। फिर भी, हम इस प्रकार जीते हैं मानो यह संसार हमारा वास्तविक घर हो। हम हमारा अधिकतर समय, धन और चिन्ता, संसार की चीज़ों में - अर्थात उन बातों में निवेश करते हैं जैसा एक गीत कहता है, "प्रयोग करने के साथ ही समाप्त हो जाओ।"[18] हम इस प्रकार कार्य करते हैं जैसे कि हमारे पास जो कुछ है उसे हमें मृत्यु तक पकड़े रहना है; और तब हम इस प्रकार कार्य करते हैं जैसे कि हमारी सांसारिक अभिलाषाओं को सन्तुष्ट करने के लिए हमें और भी अधिक पकड़ बनाए रखने के लिए ज़ोर लगाने की आवश्यकता है। जब हम इस प्रकार जीते हैं तब हम दिखाते हैं कि हमारे हृदय स्वर्ग में नहीं परन्तु पृथ्वी पर लगे हुए हैं। यीशु ने कहा, "क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा" (मत्ती 6:21)।

हमें क्या करना चाहिए? हमें उस अनन्त घर की ओर अपना ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए! हमारा वह घर कितना अद्भुत होगा जो हमारी प्रतीक्षा कर रहा है! यह अद्भुत है क्योंकि यह कैसा दिखाई देता होगा। आइए प्रकाशितवाक्य 21 के चित्र पर विचार करें। यह अद्भुत है क्योंकि वहाँ पर क्या नहीं होगा: स्वर्ग में हम मृत्यु, बीमारी और आगे किसी प्रकार के अलगाव का अनुभव नहीं करेंगे। यह इसलिए भी अद्भुत है क्योंकि वहाँ पर कौन कौन होंगे - परमेश्वर, यीशु मसीह और सब युगों के सन्त, जिनमें वे सन्त भी शामिल हैं जिनसे हम प्रेम करते थे और उन्हें हमने खो दिया था। अन्त में, यह अद्भुत है क्योंकि यह कितने लम्बे समय तक बना रहेगा - अर्थात बिना किसी अन्त के सम्पूर्ण अनन्तता तक!

निष्कर्ष। जब हम विचार करते हैं कि वह घर किस प्रकार का होगा तब निश्चित रूप से हम वहाँ पर जाना चाहेंगे! अगर हम यीशु के साथ होने के लिए "घर जा" रहे हैं तब हमें अपनी प्राथमिकताओं को सरल और परमेश्वर के राज्य को पहले स्थान पर रखना होगा (मत्ती 6:33)। स्वर्ग को अपना घर बनाने के लिए हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीना होगा!

जो लोग मसीही नहीं हैं उनके लिए परमेश्वर की इच्छा में यीशु पर विश्वास करना (यूहन्ना 8:24), पापों के लिए पश्चात्ताप करना (प्रेरितों 17:30), मसीह में विश्वास का अंगीकार (रोमियों 10:9, 10) और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना (प्रेरितों 2:38) शामिल है। एक मसीही व्यक्ति जो परमेश्वर से फिर गया है उसे परमेश्वर के साथ अपना जीवन ठीक करने के लिए अपने पापों से पश्चात्ताप करने और अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करने की (प्रेरितों 8:22), साथ ही उन पापों को अंगीकार करने की (1 यूहन्ना 1:9) आवश्यकता है। अगर हम परमेश्वर के साथ विश्वासयोग्य हैं तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम अनन्त आनन्द के लिए घर जाएँगे! एक प्राचीन भजन कहता है, "घर आ रहा हूँ, घर आ रहा हूँ ... प्रभु, मैं घर आ रहा हूँ।"[19] क्या हमारे साथ भी ऐसा है?

"उन्होंने अपनी अपनी पूंजी के अनुसार" (2:69)

जिस प्रकार उन लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति ने योगदान देने का निर्णय लिया जिससे मन्दिर का पुनः निर्माण किया जा सके तब उन्होंने "अपनी अपनी पूंजी के अनुसार" दिया, उसी प्रकार वर्तमान समय के मसीही लोगों को "अपनी सामर्थ्य भर" देना चाहिए और "सामर्थ्य से भी बाहर" (2 कुरि. 8:3) देने के कारण उनकी प्रशंसा की गई है। हमसे कहा गया है कि हम मन में ठानें और "न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से" (2 कुरि. 9:7; देखें 1 कुरि. 16:2) परन्तु हर्ष से दें। जब हम उस प्रकार से देते हैं जिस प्रकार हमें देना चाहिए तब हमारे दान भरपूरी के साथ और उदारता के साथ दिए जा सकेंगे, ठीक उन लोगों के दानों के समान जो जरुब्बाबेल के साथ यरूशलेम पहुँचे थे।

समाप्ति नोट

[1]"येहूद" नाम "सिक्कों से और मोहर की छाप से जाना गया है जो YHD के साथ अंकित किया गया जो इसकी दिनांक लगभग 538-331 ई.पू. बताता है." (कीथ एन. स्कोविल्ले, *एज्रा-नहेम्याह,* द कॉलेज प्रेस एनआईवी कमेन्ट्री [जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2001], 48)। [2]उपरोक्त. [3]1 एस्द्रास 5:7-46 में इसी समान सूची पाई गई है। [4]*इवेन्जलिकल कमेन्ट्री ऑन द बाइबल* एड. वॉल्टर ए. एलवैल (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1989), 299 में लूइस गोल्डबर्ग, "एज्रा।" एज्रा अथवा नहेम्याह में में दी गई सूची मौलिक है अथवा दोनों ही किसी समान स्रोत से नकल की गई, यह निश्चितता से जाना नहीं जा सकता। [5]एडविन एम. यमूची, "एज्रा-नहेम्याह," में *द एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैब्लिन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1988], 606-7. [6]वर्तमान में मसीही विधान में इस प्रकार की भिन्नता अस्तित्व में नहीं है; इसके स्थान पर सारे मसीही याजक हैं (1 पतरस 2:5, 9)। [7]"की सन्तान" अभिव्यक्ति का यहाँ पर अर्थ "के वंशजों" (NIV) अथवा "के परिवार का" (CEV) के समान है. [8]लेवी लोग इस्राएलियों से दशमांश प्राप्त करते थे और याजकों की जीविका के लिए दशमांश का दशमांश देते थे (गिनती 18:21, 26). [9]जेकब एम. मेयर्स, *एज्रा, नहेम्याह,* द ऐंकर बाइबल, वोल. 14 (गार्डन सिटी, न्यू योर्क: डबलडे एंड कं., 1965), 19. [10]उपरोक्त.

[11]2:64 में बताई गई सूची की कुल संख्या ठीक वही है जो नहेम्याह 7:66 (42,360) में दी गई है, परन्तु उस अध्याय में व्यक्तिगत संख्या उस संख्या से अलग है जो एज्रा में दी गई है. [12]डेरेक किड्नर, *एज्रा एन्ड नहेम्याह,* द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 43. [13]रुबेन रेटस्ज़लेफ़ एन्ड पॉल टी. बट्लर, *एज्रा, नहेम्याह एन्ड एस्तेर,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1979), 30. [14]http://en.wikisource.org/wiki/Goin%27_Home; Internet; accessed 11 अगस्त 2014. [15]539 ई.पू. में कुस्रू राजा बना. उसने अपने राज्य के प्रथम वर्ष के समय यहूदियों को लौट जाने की स्वीकृति देते हुए एक आज्ञा निकाली (2 इतिहास 36:22, 23; एज्रा 1:1-4); इस कारण उस वापसी की दिनांक लगभग 538 ई.पू. होनी चाहिए। [16]यमौची, 604. [17]यहाँ पर आने वाले शब्द आई. एन. कार्मन, "हियर वी आर बट स्ट्रेइंग पिल्ग्रिम्स"; डी. डब्ल्यु. सी. हंटिंगटन, "ओ थिंक ऑफ़ द होम ओवर देयर"; और जे. के. अल्वूड, "ओ दे टेल मी ऑफ़ अ होम," *सोंग्स ऑफ़ द चर्च*, कोम्प. एन्ड एड.ओल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोन्रो, लुसियानाः हॉवर्ड पब्लिशर्स, 1977) से लिए गए हैं। [18]टिल्लिट एस. टेड्डली, "अर्थ होल्ड्स नो ट्रेज़र्स," *सोंग्स ऑफ़ द चर्च*, कोम्प. एन्ड एड. ओल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोन्रो, लुसियानाः हॉवर्ड पब्लिशर्स, 1977)। [19]विलियम जे. कर्कपेट्रिक, "आई'व वन्डर्ड फ़ार," *सोंग्स ऑफ़ द चर्च*, कोम्प. एन्ड एड. ओल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोन्रो, लुसियानाः हॉवर्ड पब्लिशर्स, 1977)।